International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979
Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 10; October 2017; Page No. 151-155

बघेलखण्ड के सेंगरों का सांस्कृतिक अनुशीलन

डॉ० सुमन तिवारी
पी–एच०डी० (इतिहास) – अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत।

सारांश
छठी शताब्दी के अंतिम चरण में गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद भारतीय इतिहास के एक महान युग का अन्त हो गया। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद भारत के विभिन्न भागो में राजनीतिक सत्ता के अनेक स्वतंत्र केन्द्रो का उदय हुआ [1] और इसके साथ ही भारत की राजनीति में बहुराज्यवादी व्यवस्था अपने दुर्गुणों सहित प्रारम्भ हुई।
यद्यपि हर्ष ने जिसकी राजनीतिक शक्ति का केन्द्र कन्नौज था ने उत्तर भारत की राजनीतिक एकता को अक्षुण्य बनाये रखने का प्रयास किया लेकिन उसकी मृत्यु (647ई.) के बाद उसका राज्य व उत्तर भारत की एकता दोनो नष्ठ हो गई। फलस्वरूप अनेक आन्तरिक सामन्त, अधिनस्थ राज्य व ब्राह्म शक्तियों ने नवीन राज्य व राज्य वंश की स्थापना की।
इन नवीन शासक वर्गो का भारतीय इतिहास में राजपूत नाम से पदार्पण हुआ जो अपनी विशेष सामाजिक व्यवस्था क्लेन (कुल)[4] से बंधे हुऐ थे। हर कुल अपने को एक सामान्य पूर्वक का वंशज बताता था फिर चाहे वह पूर्वज वास्तविक रहा हो या काल्पनिक। एक कुल की सामान्यतः एक परस्पर संबंध क्षेत्र में प्रधानता होती थी और ये ज्यादातर 12 या 24 अथवा 48 या 84 गावों की इकाइयों मे होते थे।[2] राजपूतो के अनेक कुलो का उल्लेख भारतीय इतिहास में मिलता हैं जैसे प्राचीन ग्रन्थ कुमारपाल चरित एवं वर्ण रत्नाकर आदि में पराम्परागत 36 राजपूत कुलो की सूची मिलती हैं एवं राजतंरगणी में 36 राजपूत कुलो का उल्लेख हैं यद्यपि इसकी सूची में भिन्नता मिलती है परन्त राजपूतो से संबंधित हर ग्रन्थ में यह समानता हैं कि प्रत्येक में इसकी संख्या 36 का ही उल्लेख मिलता है।[3] अतः स्पष्ट होता है राजपूतो के छत्तीस कुल थे लेकिन ये सूचियां इस ढंग से बनाई गई थी कि इनमें परिवर्तन संभव रहा। इन कुलो के राजपूत ज्यादातर कही न कही शासक वर्ग के रूप में रहे हैं। इन्ही छत्तिस कुल में से एक सेंगर राजपूत का कुल हैं।

शब्द कुंजी : बघेलखण्ड, सेंगर, सांस्कृतिक, अनुशीलन, राजपूत, रीवा।

प्रस्तावना
सेंगरो को राजपूतो से जुड़े अन्य प्राचीन ग्रन्थों व राजपूत की दी गई सूची के 36 कुल में स्थान प्राप्त हैं, लेकिन सेंगरो की उत्पत्ति से सम्बन्धि पर्याप्त जानकारी की ऐतिहासिक ग्रंन्थों में कमी हैं। शोध करने पर कुछ बिखरे हुए साक्ष्य; पुरातत्व और साहित्य से अवश्य मिले हैं जिन्हे संग्रहित करने कर इनके इतिहास पर प्रकाश डाला गया हैं। इन अव्यवस्थित साक्ष्यो की सत्यता की प्रामाणिकता के लिए तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता हुई हैं।
सेंगरो की उत्पत्ति से सम्बधित पराम्परिक धारणा हैं जो कुछ इतिहासकारो द्वारा स्वीकार की गई हैं और इसी के आधार पर सेंगर स्वयं को चन्द्रवंशी क्षत्रीय बताते हैं। इसी धारणा को सेंगरो की उत्पत्ति का आधार 'एन इथनोग्रफीकल हैड़ बुक फार दा एन. डबलू.प्रोविन्स' (Hand book of Rajasthan)" में बिलियम कुक ने बनाया हैं। इस धरणा के अनुसार ''सेंगरो की उत्पत्ति ऋंगी ऋषि से हुई हैं। कन्नौज के एक गहरबार राजा अपने दरबार में ब्राम्हण ऋषि को आमंत्रित किये और अपनी पुत्री देवकुल का विवाह उनसे किया। विवाह के पाष्चात राजा ने अपनी पुत्री को दहेज के रूप में बहुत से गावं व सम्पति दी। इन गावों का विस्तार कन्नौज से मानिकपुर तक था। इन ऋषि का पौत्र पूरणदेव हुआ जिसे सेंगर राजपूत कुल का जनक कहा जाता हैं। पूरन देव ने डेक्कन को उत्प्रवास किया वही से सेंगर मालवा के धार, सिरौंज और रीवा में बान्धवगढ, जगमनपुर, जालौन, इटावा, बार्डर के पास पहुंचे।''[4] विलियम कुक लिखते हैं कि ''सन् 1065 में राजा विशुष देव का जन्म हुआ जो कन्नौज के राजा राठौर जयचन्द्र की पुत्री से ब्याहा गया था और इस शहर के गिरने के बाद इटावा के बडे भागो पर कब्जा कर लिया और वहां की बसिन्द नदी का नाम अपने सम्मान में सेंगर या सेंगरी नाम दिया।''
सेंगरो की उत्पत्ति को वर्णित करती इस परामपरिक धारणा में यह स्पष्टतः कहा गया हैं कि सेंगरो की उत्पत्ति एक गहरवार कन्या व ब्राम्हण पुरूष से हुई जिनके वंशज श्रृंगी से श्रंगार और समयान्तराल सेंगर कहलाये, यह सत्य के करीव जान पडता हैं कि सेंगर वंश का जन्म ब्राम्हण और किसी शक्ति सम्पन्य वर्ग के मिलने से हुआ किन्तु वह शक्ति गहरवार थे निश्चयर्पूवक नही कहा जा सकता। जहा तक हमनें शोंध में पाया कि सेंगरो की उत्तपति 9वी–10वी शताब्दि के मध्य की हैं जबकि कन्नौज में गहरवार राज्य की स्थापना चन्द्रदेव ने राष्ट्रकूट शासक गोपाल को हराकर 1080–85 ई. में की थी जो 1193ई में गजनी द्वारा जयचन्द्र को पराजित कर मारे जाने तक रहा।
जहां तक इस कथा की सत्यता की बात हैं इसमें ऐतिहासिकता को पौंराणिक कथा का रूप दिया गया। इस कथा में सेंगरो की उत्पत्ति को राजत्व के दैवी संकल्पना से जोड़ने राजवंश की वंशावली को आकर्षक व प्रभावपूर्ण बनाने के ऐतिहासिक व्यक्ति ऋंगी ऋषि से जोड़ने का प्रयत्न किया गया है। इस वैवाहिक संबन्ध में सत्यता यह जान पड़ती है कि किसी सेंगर पुरूष का गहरवार कन्या से विवाह हुआ होगा वह सम्भवतः विशुष देव हो सकता है जो समकालिक गहरवारो से वैवाहिक सम्बन्ध में बंधा जिससे सेंगरो की पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। सेंगर–गहरपार का यह संबंध सेंगरो के राजनैतिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभता रही हैं। 11वीं शताब्दी तक सेंगर एक महत्वपूर्ण राजनीतिक स्थिति प्राप्त कर ली थी जो समकालिन राज्य शक्तियो से अपना

राजनीतिक व सामाजिक संबंध रखे। इसके अतिरिक्त ये वैवाहिक सम्बन्ध सेंगरों का सामाजिक स्तर को ऊचा उठाने के लिए भी महत्वपूण होते थे

इस प्रकार हमारा विचार है कि सेंगरो की उत्पत्ति के सम्पूर्ण विश्लेषण एक व्यापक सामाजिक आर्थिक राजनीतिक प्रक्रिया के रूप में देखना तर्क संगत होगा। इस दृष्टि से सेंगरो के उदय के दो तिथिक्रमात्मक अवस्थाओं की परिकल्पना की जा सकती है। प्रथम चरण में तो यह एक राजनीतिक प्रक्रिया थी जिसमें सेंगर राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने के लिए उन आदर्शो का पालन करते थे जो तत्कालीन राजनीतिक सिद्धांतो में छाए हुए थे और सेंगरो ने इस आदर्श या बैधता को अपनाकर एक अखिल भारतीय स्थान या वंशो की संरचना के समान पौराणिक काल के क्षत्रिय वंशो की संरचना समान प्रतिस्त्वि वंशो के तुल्यता प्राप्त करने चाही। किन्तु दूसरे चरण में लगभग 10वी शती से सेंगर का उदय एक सामाजिक घटनाक्रम भी थी जिसे उद्रभूत मध्ययुगीन चेतना ने विकसित करने में योगदान दिया।

प्रारंभिक सेंगर राज्य

10वीं–11वीं शताब्दी में कंन्नौज में गहरवारों के आस–पास सेंगरो की हलचल थी। इससे स्पष्ट होता है कि इसी राज्य के आस–पास ही सेंगरो का प्रांरभिक राज्य रहा है। यह स्थान सम्भवतः जलौन रहा हो। सेंगरो राज्य वंश पर संस्कृत में नीलकणु मह द्वारा लिखी गई पुस्तक भगवत भास्कर के अनुसार – चेदि के राजा कर्ण ने नए राज्य यमुनाव चर्मवती (चम्बल) के संगम पर कायम किया इसी के वंशज विजयशाह हुआ जो 1027 ई. 1030 के बीच म. गजनवी से लडा इसकी पीढी में विशुष देव हुआ इसी के वंश में भगवत भास्कर हुए और भगवन्त भास्कर से 20 वी पीढी में जगमन शाह हुआ।

इससे तो एक बात स्पष्ट होती है कि प्रारंम्भिक सेंगर राज्य यमुना दो आव के पास जगमनपुर था। जगमनपुर में ही सेंगरो का भव्य किला स्थित है। यही से अन्य स्थान पर सेंगर अपनी शक्ति विस्तार किये। कनिंघम के अनुसार सेंगर की उत्पत्ति के विषय में ज्ञात नही है लेकिन जगमनपुर में इनका केन्द्र था। "Hand book of Rajesthan" में वी बेन्गले लिखिते है कि जालौन का राजा सेंगर क्लेन का मुखिया था[1] अतः निष्कर्षत कहा जा सकता है कि सेंगरो का प्रारंम्भिक राज्य जालौन था यही से 11वीं शताब्दी तक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिये थे। कनिंघम लिखते है कि पृथ्वीराज के सेंगर विश्वत सैनिक मित्र थे जान पडता है इस समयस तक सेंगर स्वतन्त्र बडे राज्य की स्थापना कर चुके थे नीलकुण्ड भटट भगवन्त भास्कर को महाराजधिराज की उपाधि लिखता है।

सेंगर वंषावर्तस–महाराजधिराज–भगवत सिंहवा
– अष्टमीमांसक –भट्ट नील कण्डकृत

यहा महाराजधिराज विरूध राजक्षित कवि की कुछ प्रशासात्मक झलक है क्योकि 9वीं शताब्दी तक कन्नौज गहरवार चौहान जैसी शक्तियों के अधिकार में दिल्ली से दोआव तक क्षेत्र था जहां सेगरो के राज्य विस्तार सम्भव नही था। लेकिन निलकण्ड व कनिंघम के कथन से यह अवश्य जान पडता है कि सेंगर एक राज्य के रूप में स्थापित थे हां यह हो सकता है कि वे गहरवारो के सनद रहे हो। सन 1193 में चन्द्रावर के युद्ध के बाद गहरवारो के गिरते ही ये अपनी शक्ति इटावा व जालौन के आस–पास के जिलो में बढायेंयद्यपि चन्द्रावर के युद्ध के बाद तुर्को ने यहां अपना एक सुबेदार नियुक्त किया था लेकिन जल्द ही स्थानीय शासक उसे उखाड फेंका। इससे स्पष्ट है कि तुर्क इतने शक्तिशाली नही थे कि राज्यों पर नियंत्रण कर सके। बीच वेन्गले के अनुसार कंन्नौज राज्य के नष्ट होते ही सेंगर बुधिया और औरया के परिमाण पर काबिज हुए। इटावा के बडे क्षेत्र पर सेंगर राज्य का शासन था। यही से सेंगर बघेलखण्ड मे प्रवेश किये 12वीं शताब्दी तक सेंगरो का वृहद राज्य वर्तमान उत्तर प्रदेश (इटावार जलौन बस्ती सरावन आदि) म.प्र. (दतिया, मालवा, बघेलखण्ड) व बिहार के जिलो तक फैला था।

जालौन (जगमनपुर)

यह वर्तमान उत्तर प्रदेश के जालौन जिले में रामपुरा ब्लाक से 9 कि.मी. दूर पंच नदियों के संगम के पास स्थित है जगमनपुर सेंगरो का प्रारंभिक ठिकाना है जहां से सेंगर अन्यत्र अपनी शक्ति विस्तार किये। इस राज्य घराने का नाम जगमन शाह के नाम पर किया गया है बाबर के समकालिक थे जगमनपुर में सेंगरो के किले आज तक सुरक्षित

सरावन

वर्तमान उत्तर प्रदेश के जालौन जिले के केन्द्र से 17 कि.मी. दूर यमुना नदी के पास सराबन है यहा आज भी सेंगरो के बनवाये किला भग्न आव्था में स्थित है। किले के एक किनारे लंका टावर चौरासी गुम्बद है।

नोरपुर : यह जालौन जिले के ओराइ में स्थित है यहा आज भी 5000 सेंगर है।

साहर का ठिकाना : यह इटावा जिले में स्थित है यह अकबर क आधीन परगना थ इसके दक्षिण में फंफूद का महल है फफूंद सेंगरो का महत्वपूर्ण ठिकाना।

लंकानेश्वर : यह उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में स्थित है लंकानेश्वर में सेंगर 11 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अपना ठिकाना स्थापित किया। यहां के प्रमुख ठाकुर बलबंत सिंह ने इसका क्षेत्र विस्तार किया।

बघेलखण्ड : वर्तमान बघेलखण्ड मध्यभारत मे स्थित राजपूत रियासत है। इस रियासत का केन्द्र रीवा जिला था जिसके अन्तर्गत मऊ गंगेव नईगढी मनगवा तक सेंगरो का क्षेत्र था। बघेलखण्ड में सेंगर बघेल बुन्देलो के प्रवल प्रतिरोध के बावजूद दृढता पूर्वक अपनी राज्य सीमा पर खडे रहे और कलान्तर तक अपन गढी को बनाये रखे

बघेलखण्ड में सेगरो का आगमन

यह निश्चित जान पडता है कि सेंगरो का मूलतः निवास उत्तर प्रदेश के जालौन जिले में हुआ था। वहां से सेंगरो का पलायन बघेलखण्ड सहित अन्य क्षेत्रो में हुआ लेकिन ये पलायन कब व किन परिस्थितियों में हुआ यह सेंगरों द्वारा नही जाना जाता है। यह शोध का विषय है कि एक उपजाऊ दोआव क्षेत्र को छोड़कर सेंगर पहाड–डाहर क्षेत्रो में अपना ठिकाना बनाया और फंफूद जैसे राजघराने पूरी तरह खाली रह गया।

सामान्यतः

किसी स्थान पर अप्रजन आर्थिक सामाजिक व राजनीतिक कारणो से हुआ करता था। यहा आर्थिक कारण से सेंगरो के पलायन का

सार्थक नही जान पडता क्योंकि पूर्ववर्ती क्षेत्र एक उपजाऊ दो आव था जहां आर्थिक विपन्नता कोई कारण नही था। दूसरा राजनीतिक है सम्भवतः सेंगरो का वहा से पलायन का कारण रहा है। कन्नौज का उपजाऊ सम्पन्न राज्य होने के कारण आक्रमणकारियों के निशाने में रहा जिसे अरब तुर्क कई बार लूट पाट कर शिकार बनाये इन कारण से सेंगर एक सुरक्षित ठिकाने की तलास में बघेलखण्ड की तरफ मुख किया

हम जानते है कि 27 अप्रैल 1203 मं मो. कुतुबद्धीन ऐवक के अधीन कलंजर के किले से दोआब तक अधिकार कर चुका था लेकिन कुतबुद्यीन की एकाएक मृत्यु के पश्चात पुनः स्थानीय शक्तियां (राजपूत) अपनी शक्ति संगठित कर राज्य को सुदृढ करने का प्रयास तेज कर दिये। इलाकेदार अपनी किले बन्दी करना शुरू कर दिय थे जैसे चन्देलो ने पुः कलंजर को अपने कब्जे पर कर लिया व सेंगर इटावा से औलिया व बुधिया लेकिन एक बार पुनः बलबन शासन के प्रत्यक्ष नियंत्रण में कर राजपूतो के गढो को तहस नहस कर दिया जंगलो को साफ कर सडको की हिफाजत के लिए अफगान सैनिक लगा दिये। इस प्रकार मुसलमानो के निंरतर आक्रमण व बलबन की कठोर नीति के कारण दोआब क्षेत्र से सेंगरो का पलायन एक सुरक्षित ठिकाने की तालाश मे विन्ध्य पहाडियों के नीचे जिये स्थानीय भाषा में तरहार कहते है से होते हुए बघेलखण्ड के उत्तर पूर्वी क्षेत्र में हुआ। सेंगर बघेलखण्ड में एक शरणार्थी के रूप में आए थे जो धीरे–धीरे अपने शक्ति को बढाए। रीवा राज्यदर्पण व तवारीखेबघेलखण्ड में सेंगरें के यहाँ आगवन मार्ग का जिक्र किया जाता है।

बघेलखण्ड मे सेंगरो का आगमन सर्वप्रथम केवटी से हुआ। केवटी सितलहा परगाना में प्रपात के पास स्थित स्थान है जहा से महाना नदी तरहार की ओर अग्रसर होती है। केवटी में सेंगरो का प्रवेश तरहार से त्योथर सोहागी के पहाड़ को पार कर सितलहा परगना में हुई और धीरे–धीरे नीचे के क्षेत्रो में विस्तार किया। इस घटना के सम्बन्ध में एक जनश्रुति है जिसे रहमान अली ने अपनी पुस्तके तवारीरो बघेलखण्ड में विसतर से लिखा है।'' बघेलो के मान्निद सेंगर भी कदापि वशिन्दा इस मुल्क के नही है सेंगरो का बयान है कि तीन भाई हकीकि कौम सेंगर वांकदेव बंधकदेव सारंग देव फफैद के रहने वाले गरदिश जमाना से इस मूल्क में बारिद हुए और मौजा केवटी में जो विलफेल मुतअल्कि परागना सितलहा से है। आगे लिखते है कि ये एक ब्राम्हण पन्नीता के दरवाजे पर मुकीम हुए इन लोगो के आमद का जामान सम्बतः 935 रहा। इस दोहरा से जो सेंग्रान मे मशहूर है पाया जाता है।

आगे सेंगरो के यहा विस्तार के बारे में कहा जाता है कि ये तीन भाई आए व अलग–अलग क्षेत्र में विस्तार किये रहमान अली लिखते है कि ''बरदानी शिव की सदा सेंगर सारंगदेव आये फफौद ते पूजो ब्रमन देव इटार की गढी पर काबिज हुआ उसी की औलाद इटार हिनौती के सेंगर है। सारंग देव उसने बनिस्वत दो भाइयो से ज्यादा जमीन तो उसने रजहोक गढी में कब्जा कर लिया बाद में चन्देह रजहा से मौजा सिलपाटन और वहां से पाडर और पाडर मे मऊ तक पहुचा उसक औलाद मऊ में अपना केयाम कर लिया।''[2] उपर्युक्त जनश्रुति के माध्यम से रहमान अली बघेलखण्ड में सेंगरो के विस्तार का परिचय दिया। यद्यपि उपर्युक्त वर्णन में कुछ तथ्य ऐतिहासिक रूप से सत्य नही पाये गए। फिर भी रहमान अली जो बघेल खण्ड के इतिहास के मूलस्त्रोत ग्रंथ रचनाकार है, सेंगरो के बघेलखण्ड में उत्तरोतर विस्तार में कुछ पीढी के लिए प्रत्यक्षदर्शी कि भूमिका में थें।

रहमान अली का सेंगारो के प्रारंभिक राज्य विस्तार का दैविक सिंद्धात से जोडना वा दर्शाई गई तिथि असंगत प्रतीत होती है। यहां पर सेंगरो के विस्तार से सम्बधिंत ब्राम्हण एवं भगवान शंकर के कृपा कि कथा सांकेतिक मात्र है राज्य स्थापना को सामाजिक मान्यता एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि के लिए दैविक सिंद्धांत से सम्बन्ध स्थापित किए है।

इसी तरह सेंगरो के आगमन कि दर्शाई गई तिथि 878 ईस्वी. संम्भवतः गुजोत्र काल के बाद कि राजनीतिक स्थिति व अरब आक्रमण को ध्यान में रखकर लिखी गई है। 878 ईस्वी. सेंगरो कि उपस्थिति का पता जालौन में चलता है लेकिन इस समय सेंगर सामान्य सामंत या इलाकेदार रहे हो। रमहमान अली द्वारा सेंगरो के बघेलखण्ड आगमन का दिया गया स्थान फैफूद से विस्वास किया जा सकता है फैफूद जो उत्तर–प्रदेष के इटावा जिले मे स्थित है यह बारवीं शताब्दी का सेंगरो का शक्तिशाली ठिकाना था। जो जालौन व अन्य ठिकानो से उत्तरार्द्ध में स्थापित हुआ था। इसकी सीमा कानपुर से लगी है जो रीवा रियासत से 20 मील कि दूरी पर है, अः फैफूद से क्योटी मे सेगरो का आगमन सत्यजान पड़ता है। विन्ध्य पहाड़ के दर्रो को पार कर क्योटी पहुचने का सुगम मार्ग था। सम्भवतः इसी मार्ग से होकर सेंगर क्योटी नामक स्थान पर पहुंचे। रामप्यारे अग्निहोत्री रीवा राज्य के इतिहास मे लिखते है कि बघेलखण्ड में सबसे पहले यह लोग क्योटी नाम स्थान में आये और तत्कालीन शासन के ढिलाई के कारण पूर्व कि ओर पौ0 फैलान शुरू किया। इस प्रकार बघेलखण्ड में क्योटी से प्रवेष कर सेगर स्वतंत्र राज्य ठिकाने कि स्थापना की।

बघेलखण्ड में सेंगर बघेलो से पष्चिम होने के पूर्व इस प्रांत के ऊपर पूरा अधिकार स्थापित कर चुके थे।बघेलखण्ड अपने राज्य विस्तार के प्रारंभिक क्रम में सेंगर भरों के यहां शरणार्थी के रूप में रहे। लेकिन शरणार्थी के रूप में रहते हुए समय में उन्होने अपनी आंतरिक शक्ति बढ़ाने एवं अनुकूल अवसर कि तलाष में कुछ समय तक भरों कि सेवा चंदेलो के आक्रमण से कमजोर भरों कि स्थिति को भांप कर उनको पराजित करके भनवार गढी (वर्तमान मनगवां का क्वारी गाँव) पर अपना अधिकार जमा लिया।

इतिहासिक यह मालुम होता है कि सेंगरो का पहला ठिकाना मनवार कि गढी को कड़े प्रतिरोध के वावजूद विजय किया। शायद इसी घटना को रहमान अली ने बेधक देव को तीन रात चलने से जोड़कर प्रस्तुत किया है। सेंगर मनवार से उत्तर पूर्व दिशा कि ओर अपने राज्य विस्तार का प्रयास किया। पश्चिम कि तरफ वे बढ नही सकते थे क्योकि कल्चुरी और चंदेलो कि मजबूत शक्ति थी। अतः सेंगरो बघेलखण्ड के उत्तर पूर्व में राज्य विस्तार से किसी प्रबल प्रतिद्वन्दी का सामना नही करना पड़ा क्योकि यह अधिकतर अनउपजाऊ पहार–डहार का क्षेत्र था। जिसका ज्यादा आर्थिक महत्व न चंदेलो को और न ही मिर्जापुर के तत्कालीन शासक को था। वर्तमान हनुमना में स्थित कैमोर श्रेणी से मनवार तक सेंगर शासित राज्य रहा।

बघेलखण्ड में उत्तर–पूर्वीक्षेत्र में सेंगरो ने एक लम्बे समय तक राज्य किया जिसके शक्ति का केन्द्र समय के साथ भनवार, गंगेव, मऊगंज व नईगढ़ी क्रमशः स्थापित हुए। इन्ही प्रमुख केन्द्रोंसे अनेक सेंगर ठिकाने प्रसूत हुए जिनका सेंगर राज्य के इतिहास सर्जना में अपना महत्व है।

मनवार के सेगर ठिकाने भनवार वर्तमान सिरमौर तहसील के अन्तर्गतस्थित ह जो इलाहाबाद से सोहागी के घाट को पार करते हुए रीवा मार्ग तथा बनारस, मिर्जापुर से हनुमना घाट को पार कर दक्षिण की ओर जाने वाले मार्ग के संगम पर है। इस राज्य की अवस्थिति इसे प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण आर्थिक व्यापारिक व षहरी केन्द्र का रूप प्रदान करती है यह स्थान दूर से आने वाले लवानों का विश्राम स्थल था जहां वे माल की अदला–बदली भी

करते थे। भनवार के इतिहास के बारे में कहा जाता है कि सेंगरो के शासन के पूर्व यह क्षेत्र भरो के अधिकार में था तत्पश्चात प्रथम शासक (प्रथम पुरूष) बांकेदेव ने क्योटी से आकर इस राज्यठिकाने की स्थापना की। भनवार के बारे में प्रथम राजनीतिक इतिहास की जानकारी बघेलराजा मलकेश्वर सिंह के समय मिलती है, जिसका शासन गहोरा में वि.स. 1390–1400 के बीच था। मलकेश्वर सेंगरो से लड़ाई (युद्ध कर) में उनका बहुत सा प्रान्त जीतकर सरहदी स्थान मालंकपुर कर दिया था। वैसे रीवा राज्य दर्पण व तवारीखे बघेलखण्ड में मलकेश्वर को राजा नही माना गया है। परन्तु कथा सरीत्यसागर, बघेलवंशवर्णम के श्लोक 16–17में दलकी व मलकी का नाम मिलता है। यहां मुस्लिम इतिहासकारों ने भी दलकी व मलकीनाम के बघेल इलाकेदार का वर्णन किया है। यहां हमारा आशय बघेलवंश वर्णम् को सत्य या असत्य घोषित करना नही है हां इससे यह अवश्य मालूम होता है कि 13 वीं शताब्दी में बघेलो से परिचय होने के पूर्व तक सेंगर क्योटी से हनुमना घाट तक एक बड़े क्षेत्र पर अधिकार कर लिये था। रघुराज सिंह भनवार में प्रमुख सेंगर ठाकुर हुए जिनका शासनकाल सन् 1700 ई. तक रहा।[3] उन्होनें सेंगर राज्य की पद प्रतिष्ठा एवं शक्ति में वृद्धि की। उनके समय में सेंगरों ने अपनी शक्ति इनती बढा ली थी वे किसी शक्ति की आधीनता स्वीकार करने के लिए तैयार नही थे वे एक स्वतंत्र राज्य की तरह व्यवहार करते थे।[4] रीवा सेंगर राजारघुनाथ सिंह के समकालीन बघेल राजा अनिरूद्ध सिंह के बीच तनाव बहुत बढ गया यद्यपि बघेलो द्वारा इन पर दबाब बनाया गया[5] लेकिन उन्हें सफलता न अनिरूद्व सिंह की मृत्यु हो गई जिसके बाद युद्ध की स्थित निर्मित हो गई और इसी युद्ध ने भनवार की कोठी को बरबाद कर दिया भनवार हमेशा के लिए सेगरो से छीनकर गढी को ध्वस्त कर दिया गया

गंगेव के सेगर

सिरमौर तहसील के अन्तर्गत रीवा–इलाहाबाद राष्ट्रीय राजमार्ग 27 में 24°43′55′′ उत्तरी अक्षांस से 81°35′24′′ पूर्वी देशान्तर के मध्य गंगेव स्थित हैजो भनवार के सेंगरो का उत्तरावर्ती ठिकाना है। यह भनवार के सेंगर के भाई बन्धु को दिया गया गुजर–बसर के लिए पाट था और भनवार से 1700 ई.में निर्वासित होने के बाद सेंगर राज्य का प्राशासनिक केन्द्र हुआ।[6] सेंगरो से पूर्व गंगेव क्रमशः कल्चुरियों, चंदेलो एवं भरो के अधिकार वि.सं. 1867 ई. में रीवा दरबार द्वारा गगेंव के सेंगर को पहला पाट दिया गया था। वि.स. 1892 में महाराज विश्वनाथ सिंह ने 450 का मामला कायम कर नया पाट यहां के ठाकुर महिपाल सिंह को दिया। गंगेव को 1835 ई. में मऊ तहसील बनने के बाद सितलहा तहसील में रख दिया गया और इसके सभी अधिकार रीवा राज्य में समाहित कर लिया गया।

इटार के सेंगर

इटार वर्तमान सितलहा तहसील के अन्तर्गत स्थित गांव हैं। इस ठिकाने के सम्बन्ध में कहा जाता है कि इसके मूल पुरूष बेधकदेव मऊ एवं गंगेव के सेंगरो के साथ यहां आए। इससे यह स्पश्ट होता है कि यह सेंगरो के प्रारंभिक ठिकानो में से एक है जिसकी स्थापना सेंगरो के बघेलखण्ड में राज्य स्थापित करने के समय हुई सन् 1813 ई. में सथनी के सेंगरो द्वारा अंग्रेजो से की गई लूट पाट में इटार के सरनीत सिंह को भी उत्तरदायी समझा गया था और इसके दण्डस्वरूप इस ठिकाने का समस्त इलाका रीवा राज्य के द्वारा हड़प लिया गया।

मउ के सेगर इलाका

रीवा से 40 मील पूर्व मिर्जापुर से 61 मील पश्चिम में $24^{0}41$ उत्तरी अक्षांश से $81^{0}53$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित सेंगरो के पूर्व भरो के अधिकारो में था। रहमान अली के अनुसार इन्ही भरो के यहा से इस शाखा के मूलपुरूष शारंगदेव ने सेंगर राज्य की स्थापना की अर्थात इस शाखा की भी स्थापना सेंगरो द्वारा भरो को पराजित करके की गई। यह ठिकाना सेंगरो के प्रारम्भिक तीन मूल सेंगर ठिकानो में उत्तरार्द्ध की शाखा है। सेंगरान क्षेत्र का सर्वाधिक प्रभावशाली एवं विस्तृत ठिकाना था।[7] रहमान अली ने मउ के सेंगरो की कुछ प्रारंभिक पीढियों के अलावा क्रमबार जानकारी दी है, मऊ के 21वीं पीढी के उत्तराधिकारी त्रिलोकचन्द्र से रहमान अली, रामप्यारे अग्निहोत्री, जीतन सिंह की रीवा राजदर्पण व क्षत्रिय वंश वैभव में वर्णित वंश सूची मे पाया है। इन पीढियो के मध्यकाल में न ही किसी बाहरी शक्ति के आक्रमण का आभाश सेंगर ठाकुर लाडकू वीर युद्धा थे जो अपने क्षेत्र में किसी ब्राह्मशक्ति को प्रवेश नही करने दिया। ज्ञातव्य है कि मऊगंज पहार–डहार में कैमूर की श्रेणी के पास स्थित था जहां आक्रमणकारियो को कोई बडी आर्थिक सम्पन्यता नही दिखी जिसकी वजह से उनका ध्यान इस ओर केन्द्रित होता। स्थानीय राजाओं के परिपेक्ष में रहमान अली का यह कथन सत्य के करीब है कि सेंगर किसी बाहरी शक्ति को अपने राज्य में प्रवेश नही करने दिया।

निष्कर्ष

दुर्गम भोगोलिक स्थित के कारण ही इस क्षेत्र में ब्राह्य शक्तियों का प्रभाव कम ही रहा है। यहाँ के भौगोलिक क्षेत्र ने इतिहास पर निर्णायक प्रभाव डाला और इसे एक पृथकता प्रदान कर दिया। इसके लिए पहाड़ो आदविक प्रधान कर दिया। विन्ध्यांचल कैमूर गिरी श्रृखलाओं ने अपना पूरा योगदान दिया इसी पृथकता ने इसे देश के अन्य भागो से जुड़ने नही दिया और इस क्षेत्र क अपेक्षाकृत कम विकास के लिए भी यही कारण अध्याधिक जिम्मेदार रहा है हालांकि इस पृथकता का एक फायदा रहा कि यह क्षेत्र अपनी सांस्कृतिक आंचलितका को बचाकर रख सका यह अपने आंचल में प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक तक की सम्यता व संस्कृत को अपने आंचल में समेटे हुआ है बेलन की सहायक नहीद ओद्ध अदवा से लेकर अनेक प्रपात के कन्दराओ में पाषाण काल से भौगालिक काल के कई चिन्ह अवशेष बिखरे पड़े है।

मऊराज्य की 21वीं पीढी के उत्तराधिकारी राजा प्रहराजबली हुए इनके सम्बन्ध में जानकारी मिलती है कि इनकी दो रानियां थी छोटी रानी से त्रिलोकचन्द्र एवं बडी रानी से वैसचन्द्र हुआ। इन दोनो में उत्तराधिकार को लेकर विवाद हुआ था। इस घटना को रहमान अली विस्तार से इस प्रकार लिखते है कि ''छोटी रानी से त्रिलोकचन्द्र मूरिस आला मऊ का बाद में उस्के बडी रानी से बैसचन्द्र मूरिस आला नईगढी पैदा हुए। बडी रानी बलेहाज अपने बडाई में चाहती थी कि मेरा बेटा बली बैसचन्द्र अहद हो। राजा प्रहराज बली ने अपने बडे बेटे त्रिलोकचन्द्र को बली अहद (उत्तराधिकारी अथवा युवराज) करार दिया। बडी रानी की ख्वाहिस पूरी नही हुई तो वह अपने बेटे बैसचन्द्र के साथ जागीर पांडर में चली गई और वही का केयाम अख्तियार किया। इस प्रकार मालूम होता है कि प्रहराजबली के समय तक सम्पूर्ण सेंगरान क्षेत्र मऊ ठिकाने के अन्तर्गत था। सेंगरान शासन प्रशासन में राजा प्रमुख होता था और प्राचीन हिन्दू शासन पद्धति से ही यहां का शासन संचालन होता था। 21 वीं पीढी में राजत्व के पद के लिए

छीना–छपटी की प्रवृत्ति दिखा किन्तु हिन्दू उत्तराधिकारी रीति के अनुसार राजा प्रहराजबली ने बडे पुत्र त्रिलोकचन्द्र को पद सौपकर इस विवाद को समाप्त कर दिया।

संदर्भ

1. भारतीय इतिहास कोष : सचिदानंद भट्टाचार्य
2. मौलवी रहमान अली : तोहफा ए खान बहादुर पृ. 460.
3. राम प्यारे अग्निहोत्री : रीवा राज्य का इतिहास, पृ. 63.
4. राजीव लोचन अग्निहोत्री : बघेलखण्ड के संस्कृत काव्य : चौखाम्बा प्रकाशन वाराणसी
5. प्रो. के. दीपचन्द्र जैन : विन्ध्य के विस्मृत कवि
6. मौलवी रहमान अली : तोहफा ए खान बहादुर पृ. 462–63.
7. राम सागर शास्त्री : विन्ध्य दर्शन